© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 01 | January - March 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed

# "गुड़गांव जिले की विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों, आत्म–प्रत्यय तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"

**सुरेन्द्र**
शोध छात्र, शिक्षा विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
रोहतक (हरियाणा)

**सारांश**

*इस अध्ययन का उद्देश्य गुड़गांव जिले की विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों, आत्म प्रत्यय तथा समायोजन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना। गुड़गांव जिले की कॉलेज की 300 विवाहित तथा 300 अविवाहित छात्राओं का न्यादर्श लिया गया। इस अध्ययन में शोध उपकरण डॉ० जे०पी० शैरी तथा आर०पी० वर्मा द्वारा मानवीकृत व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली, आर०के० सारस्वत द्वारा निर्मित आत्मबोध प्रश्नावली डॉ० ए०के०पी० सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन टेस्ट का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी–मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन का निष्कर्ष निकला कि विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर है। विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है। विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।*

**मुख्य शब्द–** मूल्य, आत्म–सम्प्रत्यय, समायोजन, विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राऐं

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यदि किसी भी बालक या व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो शिक्षा उसके लिए अति आवश्यक है। शिक्षा समाज और मनुष्य की आत्मा है, जिस प्रकार बिना आत्मा के शरीर बेकार होता है, ठीक उसी शिक्षा रूपी आत्मा के मनुष्य शरीर व्यर्थ होता है।

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है। परन्तु आज अनास्था तथा पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गए हैं। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा अस्वीत्ववादी जीवन, अनात्मपरक नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण तर्क प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वास एवं 'स्व' में अनास्था का परिणाम है। आत्मनाश अर्थात् अपने आदर्शों एवं मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपनी चिन्तन प्रणाली, परित्याग कर उसके स्थान पर बाहरी या विदेशी चिन्तन प्रणाली को प्रतिष्ठित करना इसके फलस्वरूप हमारे मूल्य दब से गए हैं।

यदि मनुष्य जाति उन्नति चाहती है, तो पहले नारी को शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण और सुविकसित बनाना होगा, तभी मनुष्यों में सबलता, सक्षमता, सद्बुद्धि, सद्गुण और महानता के संस्कारों का उदय हो सकता है। हमारा देश, समाज, जाति तब तक सच्चे अर्थों में विकसित नहीं कहे जा सकते, जब तक नारी को भी नर के समान ही क्रियाशीलता और प्रतिभा प्रकट करने का अवसर न मिले। पत्नी मनुष्य की अर्धांगिनी होती है। कोई यज्ञ अथवा धार्मिक कृत्य उसके बिना सफल नहीं होगा। अनेक उदाहरण है जिनमें भक्ति और पवित्रता के कारण पत्नी अपने पति की गुरु बन जाती है। काल के प्रभाव से भारतीय नारी का प्राचीन आदर्श बहुत परिवर्तित हो गया है तो भी प्राचीन संस्कारों के कारण अब भी भारतीय नारी में जो विशेषताएं मिलती हैं, संसार में किसी भी अन्य भाग में मिल सकना असंभव है।

**मूल्य का अर्थः–**

'Value' (मूल्य) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Valere' शब्द से हुई है, जिससे तात्पर्य है– किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता। वस्तुतः मूल्य का सम्बन्ध हमारी प्राथमिकताओं पर लूमिस के अनुसार– "मूल्य मानवीय व्यवहार के वास्तविक निर्धारण हैं, जो ऐसे सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं, जिनके द्वारा विभिन्न विकल्पों में से साधन एवं साध्यों का चयन किया जाता है।"

**आत्म–सम्प्रत्यय का अर्थः–**

आत्म–प्रत्यय वह सामान्य पद है, जिसका अर्थ है व्यक्ति के गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में उसका मत। एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में जो मत रखता है, वही उसका आत्म–प्रत्यय है। प्रत्येक व्यक्ति का आत्म–प्रत्यय उसके विचारों पर आधारित होता है तथा उस व्यक्ति के लिए यह आत्म–प्रत्यय बहुत महत्वपूर्ण होता है। मनोविज्ञान में आत्म–प्रत्यय से सम्बन्धित शोध अध्ययन को सन् 1950 के आस–पास से बहुत महत्व दिया जा रहा है। आत्म–प्रत्यय व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है।

कैटेल (1957) ने भी इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए लिखा है– “Self Concept is Keystone of Personality.”

**समायोजनः–**

हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है। बालकपन से हमें जीवन की विविधि समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन संग्राम की इस लड़ाई को लड़ता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुछ चाहते हैं और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है।

**सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–**

**1. रमैया एल (1990)–**

**अध्ययन के उद्देश्यः–**

1. नौवी कक्षा के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय और माता–पिता के समायोजन स्तर का मूल्यांकन करना।
2. यदि नौवी कक्षा के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय और माता–पिता के समायोजन में कोई सार्थक सम्बन्ध हो तो।

**निष्कर्ष–**

- माता–पिता की सृजनात्मकता और आत्म–सम्प्रत्यय की धारणा में सार्थक सम्बन्ध था।
- जितना ज्यादा माता–पिता की सृजनात्मकता उतनी ज्यादा आत्म सम्प्रत्यय।

**2. मीना शर्मा (1992)–**

**न्यादर्श–**

आगरा विश्वविद्यालय के अध्यापकों के मूल्यों पर अध्ययन किया।

**निष्कर्ष–**

अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि पुरुष व महिला अध्यापकों के मूल्यों में आर्थिक व सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

**3. अनिल कुमार, पी०एम० एवं असिनाबी, टी० (2008)–**

**न्यादर्श–**

सीनियर स्कूल के अंग्रेजी पाठ्यक्रम के संदर्भ में विद्यार्थियों की रूचि, मूल्यों के प्रति जागरूकता का आलोचनात्मक विश्लेषण।

**निष्कर्ष–**

- सीनियर स्कूल के अंग्रेजी पाठ्यक्रम मूल्यों का एक अच्छा साधन है, सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए।
- सीनियर स्कूल के अंग्रेजी के विद्यार्थियों में कोई विषय में मूल्यों के प्रति जागरूकता 36 प्रतिशत है। सीनियर अंग्रेजी स्कूल के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित मूल्यों के प्रति जागरूकता में लड़कों एवं लड़कियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**4. डॉ० आर०के० यादव एवं आरती यादव–**

**न्यादर्श–**

रेवाड़ी जिले के विभिन्न कॉलेजों के 200 छात्राध्यापक (100 कला तथा 100 विज्ञान) का चयन किया।

**निष्कर्ष–**

- कला एवं विज्ञान के बी०एड० कॉलेजों के छात्रों में मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कला एवं विज्ञान की छात्राओं में मूल्यों एवं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. **स्ट्रिनर (1996) ने–** "आकांक्षा स्तर व आत्म–सम्प्रत्यय के बीच सम्बन्धों का अध्ययन" विषय पर पी–एच०डी० स्तरीय शोध कार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि आकांक्षा स्तर व आत्म–सम्प्रत्यय के बीच कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता।

**अध्ययन का औचित्यः–**

किसी भी समस्या पर शोध करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्या का हल कितना उपयोगी है, हम जानते हैं कि छात्र–छात्राएं समाज व राष्ट्र के भावी नागरिक हैं। देश का भविष्य ऐसे छात्र–छात्राओं के हाथ में है जो शिक्षा प्राप्त करने के बाद भावी उत्तरदायित्व को संभालने वाले हैं। परिवार, समाज व देश की छात्र–छात्राओं से बड़ी आशाएं एवं उम्मीदें होती हैं। किसी भी देश का विकास एवं उन्नति तभी संभव है जब सभी मिलकर देश के उत्थान में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। यदि कोई एक समुदाय, वर्ग या जाति अपना पूर्ण सहयोग नहीं करें तो देश की उन्नति एवं विकास में बाधा पहुंचना स्वाभाविक है।

**समस्या का कथनः–**

**"गुड़गांव जिले की विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों, आत्म–प्रत्यय तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"**

**शोध के उद्देश्यः–**

1. विवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. विवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्म–प्रत्यय का अध्ययन करना।
3. विवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
4. अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
5. अविवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्म–प्रत्यय का अध्ययन करना।
6. अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
7. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**शोध की परिकल्पनाऐंः–**

1. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों एवं आत्म–सम्प्रत्यय में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
5. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय एवं समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
6. विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन एवं मूल्यों में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

**शोध विधिः–**

विधि अनुसंधान समस्या का क्रमबद्ध अध्ययन करने का तरीका है। इस शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

**न्यादर्शः–**

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 01 | January - March 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed

प्रस्तुत शोध में विवाहित एवं अविवाहित कॉलेज छात्राओं को शामिल किया जायेगा तथा उनके मूल्यों, आत्म–सम्प्रत्यय तथा समायोजन का अध्ययन किया जायेगा।

1. 300 विवाहित कॉलेज छात्राऐं।
2. 300 अविवाहित कॉलेज छात्राऐं।

**शोध उपकरणः–**

1. डॉ० जे०पी० शैरी तथा आर०पी० वर्मा द्वारा निर्मित मानवीकृत व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
2. आर०के० सारस्वत द्वारा निर्मित आत्मबोध प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
3. डॉ० ए०के०पी० सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

**सांख्यिकी विधिः–**

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी–मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान का प्रयोग किया गया है।

**शोध का निष्कर्षः–**

**तालिका–1**

**विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों का मध्यमान, प्रमाणित विचलन तथा टी–वैल्यू**

| मूल्य | N | विवाहित | | अविवाहित | | टी–वैल्यू | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Mean ($M_1$) | SD ($SD_1$) | Mean ($M_2$) | SD ($SD_2$) | | |
| मूल्य | 598 | 117.91 | 3.51 | 116.41 | 4.24 | 4.70 | 0.01, 0.05 |

**परिणाम–**

तालिका–1 के आधार पर विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 117.91, 116.21 तथा SD क्रमशः 3.51, 4.24 है। टी–वैल्यू 4.24 है जो 0.01 तथा 0.05 से अधिक है, जिसके आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है कि विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

**तालिका–2**

**विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों के आत्म–सम्प्रत्यय का मध्यमान, प्रमाणित विचलन तथा टी–वैल्यू**

| आत्म–सम्प्रत्यय | N | विवाहित | | अविवाहित | | टी–वैल्यू | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Mean ($M_1$) | SD ($SD_1$) | Mean ($M_2$) | SD ($SD_2$) | | |
| आत्म–सम्प्रत्यय | 598 | 159.66 | 23.35 | 158.20 | 18.98 | 0.04 | 0.01, 0.05 |

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 01 | January - March 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed and Peer Reviewed

**परिणाम–**

तालिका–2 के आधार पर विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 159,66, 158.20 है तथा SD क्रमशः 23.35, 18.98 है, 't' value 0.84 है जो 0.01 तथा 0.05 से कम है, जिसके आधार पर परिकल्पना स्वीकृत होती है कि विवाहित कॉलेज छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका–3**

**विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन का मध्यमान, प्रमाणित विचलन तथा टी–वैल्यू**

| समायोजन | N | विवाहित | | अविवाहित | | टी–वैल्यू | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Mean ($M_1$) | SD ($SD_1$) | Mean ($M_2$) | SD ($SD_2$) | | |
| समायोजन | 598 | 49.52 | 9.42 | 50.10 | 14.05 | 0.59 | 0.01, 0.05 |

**परिणाम–**

तालिका–3 के आधार पर विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 49.52, 50. 10 है तथा SD क्रमशः 9.42, 14.05 है। 't' value 0.59 है जो 0.01 तथा 0.05 से कम है, जिसके आधार पर परिकल्पना स्वीकृत होती है कि विवाहित कॉलेज छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका–4**

**विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के मूल्यों एवं आत्म–सम्प्रत्यय का सहसम्बन्ध**

| | | Total Values | Total Self Concept |
|---|---|---|---|
| Total Values | Pearson Correlation | 1 | .034 |
| | Sig. (2-tailed) | | .549 |
| | N | 600 | 600 |
| Total Self Concept | Pearson Correlation | .034 | 1 |
| | Sig. (2-tailed) | .549 | |
| | N | 600 | 60 |

**परिणाम–**

तालिका–4 के आधार पर विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के मूल्यों एवं आत्म–सम्प्रत्ययों में साधारण सहसम्बन्ध है।

**तालिका–5**

**विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय एवं समायोजन का सहसम्बन्ध**

| | | Total Values | Total Self Concept |
|---|---|---|---|
| Total Values | Pearson Correlation | 1 | .378 |
| | Sig. (2-tailed) | | .058 |
| | N | 600 | 600 |
| Total Self Concept | Pearson Correlation | .378 | 1 |
| | Sig. (2-tailed) | .058 | |
| | N | 600 | 600 |

**परिणाम–**

तालिका–5 के आधार पर विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय एवं समायोजन में साधारण सहसम्बन्ध है।

**तालिका–6**

**विवाहित तथा अविवाहित कॉलेज छात्राओं के समायोजन एवं मूल्यों का सहसम्बन्ध**

| | | Total Values | Total Self Concept |
|---|---|---|---|
| Total Values | Pearson Correlation | 1 | .282 |
| | Sig. (2-tailed) | | .761 |
| | N | 600 | 600 |
| Total Self Concept | Pearson Correlation | .282 | 1 |
| | Sig. (2-tailed) | .761 | |
| | N | 600 | 600 |

**परिणाम–**

तालिका–6 के आधार पर विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के समायोजन एवं मूल्यों में अधिक सहसम्बन्ध है।

**शैक्षिक निहितार्थः–**

अध्ययन के परिणाम का प्रयोग हम अपने व्यवहारिक जीवन में कर सकते हैं। मूल्य, आत्म–सम्प्रत्यय तथा समायोजन का अध्ययन करके छात्र एवं छात्राओं को उचित मार्गदर्शन कर सकते हैं तथा वे अपनी दिन–प्रतिदिन के जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

1. माता–पिता तथा अध्यापक अपने बच्चों का आत्म–प्रत्यय, मूल्य तथा समायोजन स्तर को जान सकते हैं।
2. यह वर्तमान शोध कार्य अध्यापक, माता–पिता एवं समाज की सहायता करता है ताकि उनके बच्चों की योग्यता एवं क्षमताओं को जाना जा सकता है।
3. वे विद्यार्थियों के मूल्य तथा समायोजन को सुचारू रूप से व्यवस्थित शिक्षा तथा सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं।
4. इस शोध अध्ययन से अध्यापक भौतिक जीवन में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
5. आज के भौतिक एवं वैज्ञानिक युग में हम अपने बच्चों को समझकर उनके मूल्यों को विकसित करके उनके भविष्य के लिए सदा तैयार होकर रहेंगे।

**संदर्भ सूची**

1. डॉ० महेंद्र कुमार मिश्रा (1982)– अधिगम कामनो–सामाजिक आधार एवं शिक्षण, नीलकंठ पुस्तक मंदिर, जयपुर।
2. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी०एच० (1982)– मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद मंदिर, आगरा।
3. गिलपफोर्ड, जे०पी०– फण्डामेन्टल स्टेस्टस इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, लंदन मेकग्राईल बुक कम्पनी, 1958
4. चन्द्र, एस०एस० व राव, रैनू– एजुकेशनल साइकोलॉजी एवेलेयूएशन एण्ड स्ट्स्टिक्स, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, 2006

5. Mangal, S.K. (2007)– Statistics in Psychology and Education, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi.
6. Ojha, R.K. (1984)– Study of Values, Agra : National Psychological Corporation.
7. Klu Chohohn, Clyde (1975)– Values and values orientation in the theory of action, Harvard University.
8. Perry, R.B. (1954)– The Realism of Value Cambridge Mass, Harvard University Press.

**LIST OF JOURNALS**

1. Buch, M.B. (1983-88) Fourth Survey of Research in Education, New Delhi: NCERT, Vol. I.
2. Journals of Educational Studies Association of Educational Studies, NCERT, New Delhi.
3. Journal of Educational & Psychological Research, Vol.-2, Num-2, July 2012.